स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

लंबी टांगों, नुकीली चोंच और वक्ष पर पट्टे वाला यह पक्षी आंध्र प्रदेश की गोदावरी नदी घाटी और पेन्नार नदी घाटी में पाया जाता है। थॉमस जेरडॉन ने इसे 19वीं सदी के मध्य में देखा और इसका विवरण दिया था। उन्होंने इसका तेलुगु नाम अडवी बुटा-टिट्टी बताया था मगर बाद में पता चला कि स्थानीय लोग इसे कालिवी कोडी कहते हैं। कुछ समय बाद ही इसे विलुप्त मान लिया गया। बाद में 1986 में फिर देखा गया। प्राकृतवास के छिन्न-भिन्न हो जाने से इनकी स्थिति चिंताजनक बनी हुई है।

ये पक्षी कीटभक्षी हैं। बहुत ही दुर्लभ होने के कारण इनके व्यवहार और आवास के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं मिल सकी है। अनुमान है कि इनकी कुल जनसंख्या मात्र 25 से 200 के बीच है। हाल में किए गए अध्ययनों में आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया गया है जिसमें कैमरों की मदद से रेत में इनके पैरों के निशान देखकर इनकी संख्या का अनुमान लगाया गया है।

यह प्रजाति बहुत ही सीमिति क्षेत्र में पाई जाती है। अन्य क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति का पता लगाने के लिए अनुकूल आवास वाले इलाकों में रहने वाले लोगों को इनके चित्र व आवाज़ की रिकॉर्डिंग का उपयोग करके इनकी पहचान का प्रशिक्षण दिया गया है। 1988 में भारत सरकार के डाक विभाग ने इसके पुनः देखे जाने के उपलक्ष्य में टिकट जारी किया था।

इनके आवास के साथ लगातार छेड़-छाड़ हो रही है। सोमशिला बांध बनने के समय अनेक गांवों का विस्थापन हुआ, जंगलों में मनुष्यों की आबादी बढ़ने से पशुओं का दबाव बढ़ा, जंगल भी कटे। साथ ही खेती होने से इनके आवास उजड़ते गए।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी